भारत सरकार
शिक्षा मंत्रालय
स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या-4232
उत्तर देने की तारीख-27.03.2023

शिक्षण संस्थानों में बच्चों का सर्वांगीण विकास

† **4232. श्री नारणभाई काछड़िया:**
श्री दिलीप शइकीया:
श्री रणजितसिंह नाईक निंबालकर:
श्री देवजी पटेल:

क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) 'आओ और सीखो' थीम पर आधारित शिक्षा देने के लिए शिक्षण संस्थाओं में बच्चों के सर्वागीण विकास के लिए सरकार द्वारा क्या कदम उठाए गए हैं;
(ख) क्या जूनियर हाई स्कूल और निचली कक्षाओं के छात्रों के बीच प्रयोगात्मक और खोजी प्रवृत्ति विकसित करने के लिए प्रयोगशालाओं में शिक्षण प्रदान करने की कोई योजना है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और
(ग) जूनियर हाई स्कूल मैट्रिक तक की कक्षाओं के छात्रों में खोजी रूचि को प्रोत्साहित करने हेतु सरकार की क्या योजनाएं हैं?

उत्तर

शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री
(श्रीमती अन्नपूर्णा देवी)

(क) से (ग): राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के पैरा 4.4 में प्रावधान है कि सभी स्तरों पर पाठ्यचर्या और शिक्षा विधि का समग्र केंद्रबिंदु शिक्षा प्रणाली को रटने की पुरानी प्रथा से अलग वास्तविक समझ और ज्ञान की ओर ले जाना है। शिक्षा का उद्देश्य केवल संज्ञानात्मक समझ न होकर चरित्र निर्माण और इक्कीसवी शताब्दी के कौशल से सुसज्जित समग्र और बहुमुखी प्रतिभा संपन्न छात्र तैयार करना है। वास्तव में ज्ञान एक छुपा हुआ ख़ज़ाना है और शिक्षा व्यक्ति की अपनी प्रतिभा के साथ इसे प्राप्त करने में मदद करती है। पाठ्यचर्या और

शिक्षाविधि को इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए पुनः तैयार किया जाएगा। पूर्वविद्यालय से उच्चतर शिक्षा तक प्रत्येक स्तर में एकीकरण एवं समावेशन के लिए विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट कौशल और मूल्यों की पहचान की जाएगी। शिक्षण और अधिगम प्रक्रिया में इन कौशल और मूल्यों को आत्मसात किया जा रहा है, यह सुनिश्चित करने के लिए पाठ्यचर्या ढाँचा और सम्पर्क तंत्र विकसित किया जाएगा। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद इन अपेक्षित कौशल की पहचान करेगा और प्रारंभिक बाल्यकाल एवं स्कूल शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढाँचे में उनके व्यवहार के लिए तंत्र शामिल करेगा।

इसके अतिरिक्त एनईपी, 2020 के पैरा 4.5 में यह प्रावधान है कि "पाठ्यक्रम की विषय-वस्तु को प्रत्येक विषय में कम करके इसे बेहद बुनियादी चीज़ों पर केन्द्रित किया जाएगा ताकि आलोचनात्मक चिंतन और समग्र, खोज-आधारित, चर्चा-आधारित और विश्लेषण-आधारित अधिगम पर ज़रूरी ध्यान दिया जा सके। यह विषय-वस्तु अब मुख्य अवधारणाओं, विचारों, अनुप्रयोगों और समस्या-समाधान पर केंद्रित होगी। शिक्षण और अधिगम अधिक संवादात्मक तरीके से संचालित होगा; सवाल पूछने को प्रोत्साहित किया जाएगा, और कक्षाओं में छात्रों के लिए नियमित रूप से अधिक रुचिकर, रचनात्मक, सहयोगात्म्क और खोजपूर्ण गतिविधियाँ होगी ताकि गहन और प्रायोगिक सीख सुनिश्चित की जा सके"।

एनईपी, 2020 की अनुपालना में निम्नलिखित गतिविधियां पहले से ही की जा चुकी हैं:

1. एनसीईआरटी ने मंत्रालयों/विभागों, राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों सहित विभिन्न हितधारकों से बुनियादी स्तर पर विकेंद्रीकृत तरीके से इनपुट प्राप्त कर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा को विकसित करने की प्रक्रिया को शुरू किया है। राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों ने भी प्रारंभिक बाल्यकाल देखभाल एवं शिक्षा (ईसीसीई), स्कूल शिक्षा (एसई), अध्यापक शिक्षा (टीई) एवं प्रौढ़ शिक्षा (एई) सहित जिला स्तर पर विचार-विमर्श करके, मोबाइल ऐप सर्वेक्षण एवं एनईपी 2020 के अनुसार पहचान किए गए क्षेत्रों/विषयों में राज्य फोकस समूह द्वारा स्थिति पत्र तैयार करने के माध्यम से अपने राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एससीएफ) के निर्माण की प्रक्रिया को शुरू कर दिया है। बुनियादी स्तर पर प्रारंभिक बाल्यकाल देखभाल और शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफईसीसीई) एनसीईआरटी द्वारा तैयार की गई है।यह भारत में 3-8 वर्ष की आयु वाले बच्चों हेतु पहली बार एकीकृत पाठ्यचर्या की रूपरेखा है। यह एनईपी 2020 में सुझाए गए स्कूली शिक्षा हेतु 5+3+3+4 'पाठ्यचर्या एवं शैक्षणिक' संरचना का प्रत्यक्ष परिणाम है।गुणवत्तापूर्ण स्कूली शिक्षा के कार्यान्वयन के लिए कुछ परिवर्तनकारी विचारों को फ्रेमवर्क में शामिल किया गया है, जिनमें खिलौना-आधारित शिक्षण, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के मूल के रूप में खेल, पर्यावरण अनुकूल जीवन शैली, बाहरी दुनिया के बारे में सीखना शामिल हैं।फ्रेमवर्क में बच्चे के विकास

के लिए संज्ञानात्मक, सामाजिक-भावनात्मक और शारीरिक आयामों को सभी बच्चों में मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान की उपलब्धि के अनुकूल बनाने के लिए प्रेरणादायक अनुभव प्रदान किए गए हैं।

2. व्यावहारिक सोच, समस्या समाधान, निर्णय लेने की क्षमता इत्यादि के कौशल सहित मूलभूत साक्षरता और संख्याज्ञान को सुदृढ़ करने हेतु राष्ट्रीय साक्षरता एवं संख्याज्ञान दक्षता पहल (निपुण) भारत मिशन की शुरुआत।
3. मूल शिक्षाशास्त्र के रूप में खेल के माध्यम से बच्चों के समग्र विकास के लिए शिक्षकों की सहायता हेतु आधारभूत स्तर पर जादुई पिटारा नामक अधिगम-शिक्षण सामग्री के संकलन का शुभारंभ।
4. माध्यमिक स्तर, मूलभूत साक्षरता एवं संख्याज्ञान (एफएलएन) एवं ईसीसीई हेतु एक एकीकृत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम, स्कूल प्रमुखों और शिक्षकों के समग्र विकास हेतु राष्ट्रीय पहल (निष्ठा) शुरू किया गया है।
5. केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने अपने स्कूलों को सलाह दी है कि वे पाठ्यक्रम और शिक्षण पद्धति को 21वीं सदी के कौशल के साथ एकीकृत करें ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि छात्रों में इन कौशलों का विकास हो सके। शिक्षकों हेतु 21वीं सदी के कौशल से संबंधित एक पुस्तिका भी तैयार की गई है।छात्रों को 21वीं सदी में सफल होने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल से सुसज्जित करने हेतु बोर्ड ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डिजाइन थिंकिंग और डेटा साइंस आदि जैसे नए विषय भी शामिल किए हैं।बोर्ड छात्रों के बीच जीवन कौशल विकसित करने के लिए किशोर सहकर्मी शिक्षक नेतृत्व कार्यक्रम आयोजित कर रहा है।पाठ्यक्रम भार को कम करने के लिए सीबीएसई द्वारा उठाए गए कदमों के संबंध में, एनसीईआरटी द्वारा की गई कटौतियों के अनुसारसीबीएसई ने वर्ष 2022-23 के लिए अपना पाठ्यक्रम कटौती कर कम सामग्री के साथ जारी कर दिया है।

उपर्युक्त सभी पहलें बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान को सुदृढ़ करने, प्रारंभिक बाल्यकाल देखभाल और शिक्षा, बच्चों के समग्र विकास इत्यादि के उद्देश्यों को प्राप्त करने की दिशा में हैं, जो एनईपी-2020 के व्यापक उद्देश्य हैं।

*****